# विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 3 अंक : 11 सितंबर, 2010


## मॉरीशस में हिंदी दिवस समारोह

मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी

इस वर्ष हिंदी दिवस के अवसर पर भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस एवं इंदिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी निबंध तथा हिंदी वाक् स्पर्धा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में लगभग 42 स्कूलों एवं संस्थाओं ने भाग लिया। ये प्रतियोगिताएँ तीन वर्गों में बाँटी गई थीं। प्रतियोगिता सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास किए गए थे। इन प्रतियोगिताओं में स्कूली बच्चों के साथ-साथ शिक्षक, विश्वविद्यालय के छात्र एवं समस्त हिंदी प्रेमियों को भाग लेने का अवसर प्रदान किया गया। हिंदी निबंध एवं वाक् स्पर्धा प्रतियोगिताओं के विषय और पुरस्कार इतने आकर्षक थे कि लगभग 212 से भी अधिक प्रतियोगियों ने इनमें बढ़-चढ़कर भाग लिया। प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करनेवाले सभी विजेताओं को हिंदी दिवस के उपलक्ष में आयोजित समारोह में पुरस्कार प्रदान किए गए।

समारोह की शुरुआत इंदिरा गाँधी सांस्कृतिक केंद्र के शिक्षक और छात्रों के हिंदी गीतों से हुई। इस अवसर पर मॉरीशस में भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति ने अपने उद्गार में कहा कि ''भारत सरकार इस दिशा में निरंतर प्रयासशील है कि हिंदी का अधिक से अधिक प्रसार हो तथा उसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा हासिल हो । मॉरीशस की जनता और सरकार भी यही चाहती है । मॉरीशस में ही विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की गई है । यह दरअसल दोनों देशों की जनता और सरकार की इच्छाओं की साझी अभिव्यक्ति है । आर्थिक ताकत के रूप में उभर रहे भारत की भाषा हिंदी की ओर आज पूरी दुनिया आकृष्ट हो रही है । विश्व के कई देशों में हिंदी आज गंभीरता के साथ पढ़ाई जा रही है । हिंदी के प्रसार का एक अन्य कारण भारतवंशियों का इतिहास के अलग-अलग कालों में दुनिया के बहुत सारे देशों में जा पहुंचना भी था ।'' उन्होंने यह भी कहा कि '' हिंदी भारत में और भारत से बाहर भारतवंशियों को एकता और स्नेह के सूत्र में बांधती है । गर्व की बात है कि मॉरीशस में भी भारतवंशियों ने अपनी इस पहचान को कायम रखा है । मेरी यह कामना है कि मॉरीशस में हिंदी न सिर्फ साहित्य -सृजन के माध्यम से फले-फूले, बल्कि ज्ञान-विज्ञान, टेक्नोलॉजी और चिंतन की भाषा भी बने । यह जन भाषा बने, घर-घर की भाषा बने ।''

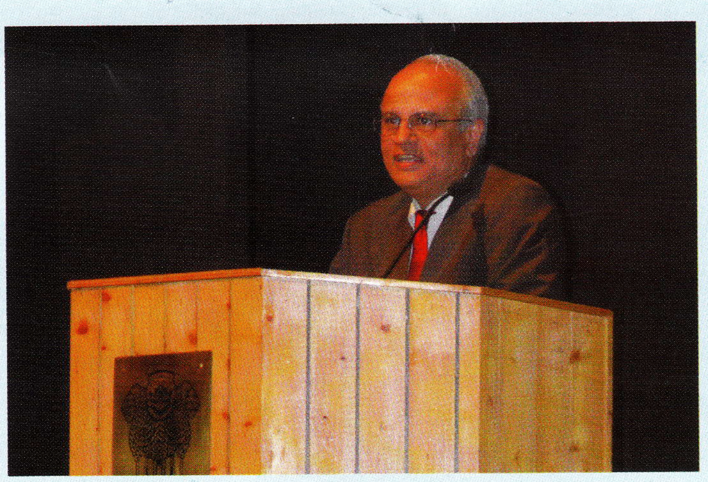

भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति

मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय श्री मुकेश्वर चुनी ने अपने व्याख्यान में कहा कि '' यह हमारे लिए अत्यंत ही गौरव और सम्मान की बात है कि विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना के लिए मॉरीशस को चुना है। इसके लिए हम भारत सरकार के प्रति आभारी हैं। आज हिंदी दुनिया के हर देश में मौजूद है। आशा है कि कुछ ही समय में हिंदी दुनिया में सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा बन जाएगी। हमारे राष्ट्र के विकास में हिंदी ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हर क्षेत्र में हिंदी की अमिट छाप है। शिक्षा, संस्कृति, समाज, अर्थ या राजनीति के क्षेत्र में हिंदी का अद्भुत योगदान है। एक समय था जब हिंदी केवल बैठकाओं में पढ़ाई जाती थी। कोई भी सुनियोजित व्यवस्था नहीं थी। लेकिन बहुत ही संघर्ष और परिश्रम के बाद आज हिंदी केवल स्कूलों में ही नहीं, बल्कि

बाएँ से माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी, माननीय श्री मुकेश्वर चुनी, प्रथम पुरस्कार विजेता दीपेश शर्मा और भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति

विश्वविद्यालय में भी पढ़ाई जाती है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में कई दशकों से भारत के उच्चायोग ने अनूठी भूमिका निभाई है। हम भारत सरकार के उपकार को कभी नहीं भुला सकते हैं। मैं हिंदी दिवस के उपलक्ष में भारतीय उच्चायोग द्वारा आयोजित इस भव्य समारोह के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।''

इस अवसर पर मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने उपस्थित श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा, '' पिछले साल भी मॉरीशस में भारतीय हाई कमीशन द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष में 'कविता-पाठ' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। यह बहुत खुशी की बात है कि इस बार हाई कमीशन द्वारा बड़े स्तर पर हिंदी निबंध और हिंदी वाक् स्पर्धा प्रतियोगिताओं का आयोजन मॉरीशस के हिंदी प्रेमी नागरिकों, शिक्षकों और छात्रों के लिए पिछले सप्ताह किया गया था। भारतीय हाई कमीशन द्वारा आयोजित इन हिंदी प्रतियोगिताओं से निश्चित ही पूरे मॉरीशस में हिंदीमय वातावरण बन जाता है। आनेवाले दिनों में अधिक से अधिक हिंदी प्रेमी इन प्रतियोगिताओं से जुड़ेंगे। हमारी नई पीढ़ी भी हिंदी पढ़ने और हिंदी में बातचीत करने की प्रेरणा लेंगे। छात्र रुचि लेकर उत्साह से स्कूल-कॉलेज और विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ेंगे। सचमुच कहूँ तो हिंदी बहुत तेज़ी से वैश्विक भाषा का रूप ले रही है। हिंदी में रोजगार के अवसर भी बढ़ रहे हैं।

मॉरीशस की जनता को अच्छी तरह मालूम है कि हिंदी हमारी संस्कृति और अस्मिता की पहचान है। हिंदी हमारे दिलों की धड़कन है। इसे हमने अपने दिलों में बिठाकर रखा है। सिर्फ मैं ही नहीं, समस्त मॉरीशसवासी हिंदी पढ़ने और बोलने में गर्व महसूस करते हैं। जो हिंदी बोल नहीं पाते, वे दूरदर्शन के ज़रिये हिंदी फ़िल्म, सीरियल और हिंदी गानों का आनंद ज़रूर लेते हैं और हिंदी सीखने का प्रयास करते हैं। यह मॉरीशस के लोगों का हिंदी भाषा के प्रति अगाध प्रेम दर्शाता है। जो समाज अपनी भाषा और संस्कृति की पहचान खो देता है, वह मिट जाता है। मॉरीशस का हिंदी प्रेम सारा संसार जानता है। हमारे राष्ट्रपिता डॉ. शिवसागर रामगुलाम का हिंदी प्रेम जग-जाहिर है। हिंदी के प्रति उनके प्रेम और दूरदर्शिता के कारण ही आज मॉरीशस में स्कूल-कॉलेज-विश्वविद्यालय, हर स्तर पर हिंदी पढ़ाई जाती है। हिंदी में विश्व-प्रसिद्ध रचनाएँ लिखी जा रही हैं। हमारे देश का हिंदी साहित्य बहुत समृद्ध है। हिंदी से जुड़ी संस्थाएँ नित नए-नए कार्यक्रमों का आयोजन करती रहती हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि उनकी पहल पर मॉरीशस और भारत के सहयोग से मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना हुई है।''

इस अवसर पर महात्मा गाँधी संस्थान की छात्राओं ने बड़े ही रोचक ढंग से पर्यावरण क्षरण, पारिवारिक बिखराव, आदर्शों का क्षरण एवं एक-दूसरे पर दोषारोपण विषय पर आधारित हिंदी नुक्कड़ नाटक 'दोष किसका ' का सफ़ल मंचन भी किया। समारोह में विश्व हिंदी सचिवालय, हिंदी संगठन, हिंदी प्रचारिणी सभा, महात्मा गांधी संस्थान, हिंदी लेखक संघ

नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करती महात्मा गाँधी संस्थान की छात्राएँ

आदि के प्रतिनिधियों के साथ-साथ अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों, स्कूलों एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी संस्थाओं के हिंदी प्रेमियों ने भी बड़ी संख्या में भाग लिया।

इंदिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशक श्रीमती अनिता अरोड़ा ने सभी उपस्थित महानुभावों एवं हिंदी प्रेमियों को समारोह में भाग लेने के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया।

समारोह का सफ़ल संचालन भारतीय उच्चायोग में द्वितीय सचिव श्री मीमांसक ने किया। ••

# लंदन में हिंदी पुस्तकों का लोकार्पण

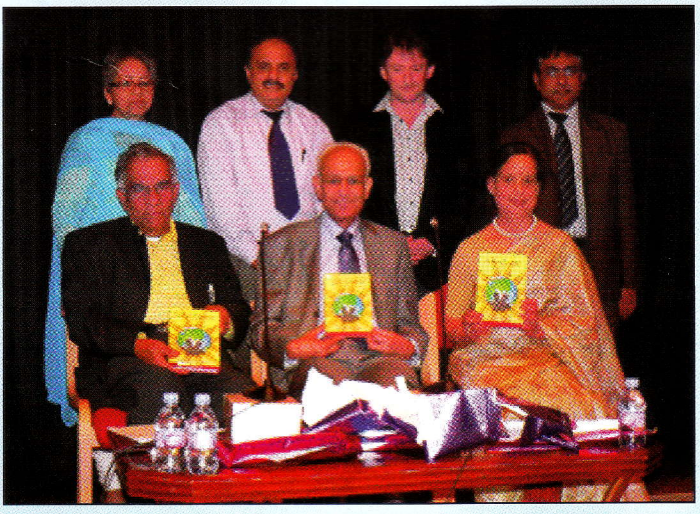

*बाएँ से बैठे हुए श्री कैलाश बुधवार, श्री वेद मोहला, डॉ. अरुणा अजितसरिया, खड़े हुए उषा राजे सक्सेना, तेजेंद्र शर्मा एवं आनंद कुमार.*

कथा यू.के एवं एशियन कम्यूनिटी आर्ट्स ने 23 अगस्त, 2010 की शाम 6:30 बजे शिक्षाविद् वेद मित्र मोहला,(एम.बी.ई.) की दो पुस्तकों 'आई जी सी एस ई हिंदी' एवं 'इक्कीसवीं सदी का बाल साहित्य' का लोकार्पण समारोह लंदन के नेहरू केंद्र में आयोजित किया।

पुस्तकों का लोकार्पण श्री कैलाश बुधवार (भूतपूर्व अध्यक्ष बीबीसी हिंदी विभाग) एवं ब्रिटेन में हिंदी परीक्षक डॉ. अरुणा अजितसरिया के हाथों संपन्न हुआ।

यूके हिंदी समिति की उपाध्यक्षा श्रीमती उषा राजे सक्सेना ने वेद जी के अनछुए पहलुओं से श्रोताओं का परिचय करवाया। श्री कैलाश बुधवार ने वेद मोहला जी को एक ऐसा मातृभाषा प्रेमी बताया जिसने विदेशी कंक्रीट के जंगल में एकलव्य की तरह हिंदी की आराधना की है और एक सिविल इंजीनियर होने के कारण हिंदी पढ़ाने वाले पंडितनुमा छवि को बदला।

श्रीमती अरुणा अजितसरिया के अनुसार इस पुस्तक में 'आई जी सी एस ई' (इंटरनेशनल जेनेरल सर्टिफ़िकेट ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन) के पाठ्यक्रम के साथ-साथ मॉरीशस एवं सिंगापुर के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में निर्धारित 'अनुवाद' तथा 'शब्दों के समुचित प्रयोग' के पाठ भी सम्मिलित किए गए हैं। पुस्तक के अंतिम भाग में हिंदी का लघुकोश, जिसमें लगभग 2400 शब्दों के अर्थ दिए गए हैं, विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। अपने प्रस्तुत रूप में यह पुस्तक हिंदीतर-भाषी विद्यार्थियों के लिए हिंदी सीखने में सहायक होगी।

दि फ़ार पैवेलियन (वेस्टेंड नाटक) के लेखक, निर्माता एवं निर्देशक माइकल वार्ड ने अपने हिंदी प्रेम के बारे में साफ़ हिंदी में बोलते हुए कहा, "मैं एक लेखक और प्रोड्यूसर हूँ और मुझे इतनी खुशी है कि मुझे भारतीय फ़िल्मकारों की अगली पीढ़ी के साथ काम करने को मिल रहा है। ये नये फ़िल्म निर्माता युवा पीढ़ी के हैं, उनमें टेलेंट है और वे ज़्यादा से ज़्यादा अपना समय फ़िल्म निर्माण एवं कहानी दिखाने एवं स्क्रीनप्ले की कला को समझने में मेहनत लगा रहे हैं।" ••

*'साहित्यशिल्पी.इन' से साभार*

# विश्व हिंदी सचिवालय अंतर्राष्ट्रीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता

हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु विश्वव्यापी वातावरण बनाने के लिए विश्व हिंदी दिवस : 10 जनवरी, 2011 के उपलक्ष्य में विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा 'हिंदी निबंध प्रतियोगिता' का आयोजन किया जा रहा है। प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार राशि क्रमशः 1000, 800 और 500 अमेरिकी डॉलर होगी। निबंध का विषय है :

**हिंदी कैसे बने संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा**

प्रतियोगिता की सामान्य शर्तें निम्न हैं :

* निबंध देवनागरी लिपि में हो,
* एक प्रतियोगी से केवल एक ही निबंध स्वीकार किया जाएगा।
* निबंध की शब्द-सीमा 2,500 (दो हज़ार पाँच सौ) होगी।
* निबंध साफ़-साफ़ हस्तलिखित अथवा टंकित हो।
* प्रत्येक प्रविष्टि मूल हो एवं कॉपीराइट से स्वतंत्र हो।

निबंध 20 दिसंबर, 2010 तक विश्व हिंदी सचिवालय, स्वीफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस पहुँच जाए। कृपया निबंध के अंत में अपना नाम, पता, दूरभाष और ई-मेल लिखना न भूलें। इस विषय पर अधिक जानकारी के लिए हमसे ई-मेल : whsmauritius@intnet.mu ; फैक्स नंबर : 00-230-6761224 और दूरभाष : 00-230-6761196 पर संपर्क कर सकते हैं।

---

# World Hindi Secretariat International Hindi Essay Competition

World Hindi Secretariat is organizing an International Hindi Essay Competition on the occasion of World Hindi Day: 10 January 2011 in order to create a worldwide atmosphere of Hindi. First, Second and Third cash prizes will be USD 1000, 800 and 500 respectively. The topic of the essay is:

Hindi kaise bane Sanyukt Rashtra Sangh ki Aadhikarik bhasha

The terms and conditions of the competition are as follows:

* The Essay will be in Hindi in Devnagri script only.
* Only one essay will be accepted from a person.
* Word limit for the essay will be 2,500 (Two thousand five hundred) words only.
* The essay should be neatly hand-written or typed.
* Each entry must be an original work and free from any copy-right.

The essay should reach World Hindi Secretariat, Swift lane, Forest side, Mauritius positively by 20 December 2010. Please do not forget to write your name, address, phone number and e-mail at the end of the essay. For any further clarification you may contact us on our e-mail address: *whsmauritius@intnet.mu* ***Fax number : 00-230-676 1224 and phone number : 00-230-676 1196.***

## भारत-नार्वे लेखक सेमिनार

*भारत में नार्वे की राजदूत महामहिम आन ओल्लेस्ताद द्वारा सुरेंद्रचंद्र शुक्ल की काव्यकृति 'गंगा से ग्लोमा तक' के विमोचन का दृश्य*

17 अगस्त, 2010 को लिटरेचर हाउस, ओस्लो में भारतीय-नार्वेजीय लेखक सेमिनार संपन्न हुआ। सेमिनार का विषय था 'भारत नार्वे के मध्य साहित्यिक संबंध'। यह सेमिनार दो नोबेल साहित्य पुरस्कार विजेताओं रवींद्र नाथ टैगोर और ब्योर्नस्त्यार्ने ब्योर्नसन के विषय में था। टैगोर की 150 वीं जयंती और ब्योर्नसन की 100 वीं पुण्यतिथि इसी वर्ष है।

'रवींद्र नाथ टैगोर' और कबीर पर अपना व्याख्यान गुरुनानक देव विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हरमहेंद्र सिंह बेदी ने दिया और विश्वकवि टैगोर पर अपना व्याख्यान दिया प्रो.असीम दत्ताराय ने। राष्ट्रीय चेतना के नायक नार्वेजीय लेखक ब्योर्नस्त्यार्ने ब्योर्नसन पर व्याख्यान दिया सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने। लघु पत्रिकाओं की साहित्य में भूमिका पर व्याख्यान दिया विनोद बब्बर ने तथा गुरुमत का भारतीय साहित्य में योगदान पर अपना वक्तव्य दिया डॉ.गुरुनाम कौर ने। नार्वेजीय राजदूत आन ओल्लेस्ताद ने भारत में नार्वे के साहित्य के अनुवाद पर प्रकाश डालते हुए दोनो देशों के सांस्कृतिक संबंधों पर प्रकाश डाला।

भारतीय राजदूत ने भी भारत और नार्वे के बीच सांस्कृतिक संबंधों के वृहत्तर होने की पुष्टि करते हुए 22 वर्ष पुरानी और नार्वे से प्रकाशित एक मात्र हिंदी पत्रिका 'स्पाइल-दर्पण' तथा सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' के योगदान को दोनों देशों के मध्य साहित्यिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत बनाने वाला बताया। पहले सत्र के बाद दूसरे सत्र में अनेक नार्वेजीय और प्रवासी कवियों ने अपनी कविताएं पढ़ीं जिन्हें बहुत सराहा गया।

इस सेमिनार के दो दिन पूर्व नार्वे में इंडो-नार्विजन इनफारमेशन एंड कल्चरल फोरम के तत्वावधान में 15 अगस्त को चिली संस्कृति केंद्र वाइतवेत, ओस्लो में 22वें अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक समारोह में भारतीय लेखकों को हिंदी सेवा के लिए पुरस्कृत किया गया। पुरस्कृत लेखकों में बालशौरि रेड्डी, प्रो हरमहेंद्र सिंह बेदी, 'राष्ट्रकिंकर' के संपादक विनोद बब्बर, डॉ गुरुनाम कौर और यालमार शेलान को भारतीय दूतावास के दिनेश कुमार नंदा, पी बालाचंद्रन और डिस्ट्रिक्ट के मेयर थूरस्ताइन विंगेर ने पुरस्कार प्रदान किए। ••

*साभार : abhivyakti-hindi.blogspot.com*

> *"अपनी भाषा की जड़ें मनुष्य में बहुत गहरी होती हैं। अपनी भाषा के माध्यम से मनुष्य जैसा ज्ञान प्राप्त कर सकता है, वैसा अन्य भाषा के माध्यम से नहीं।"*
>
> **फ़ादर कामिल बुल्के**

## हिंदी विश्वविद्यालय करेगा विदेशी हिंदी संस्थाओं से समन्वय

लंदन स्थित हाउस ऑफ कामन्स के सभागार में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान 2010 समारोह में बतौर विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लेने गए महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति वरिष्ठ साहित्यकार विभूति नारायण राय ने अपने संबोधन के दौरान कहा कि अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय विदेशों की हिंदी से संबद्ध संस्थाओं के बीच समन्वय का कार्य करेगा।

समारोह में भारतीय उच्चायुक्त नलिन सूरी ने बिहार के कहानीकार, नाटककार और रंगकर्मी ह्रषिकेश सुलभ को वर्ष 2010 का अंतर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा (यूके) सम्मान से सम्मानित किया। इस दौरान लेबर एमपी बेरी गार्डनर, सोथाल एमपी वीरेंद्र शर्मा, लार्ड तरसेम सिंह, लार्ड खालिद हमीद, लेबर काउंसिलर जाकिया जुबेरी, कथा (यूके) के महासचिव तेजेंद्र शर्मा एवं श्रीमती पद्मा राय उपस्थित थीं।

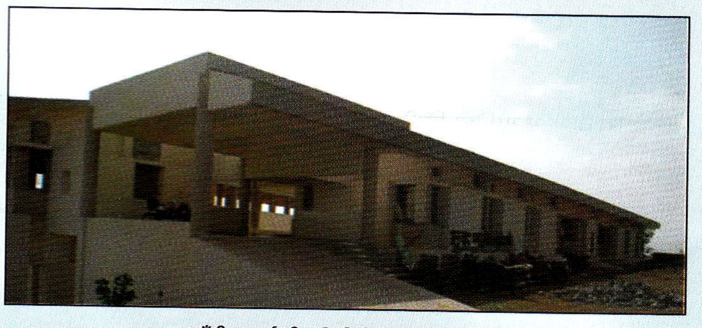

*महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का प्रांगण*

कुलपति विभूति नारायण राय ने लंदन प्रवास के दौरान लंदन की हिंदी संस्थाओं से विस्तार से विचार-विमर्श किया और उन्हें हिंदी के पठन-पाठन के लिए जरूरी सुविधाएँ मुहैया कराने का आश्वासन भी दिया। उन्होंने बताया कि इस विश्वविद्यालय की प्रकृति अंतर्राष्ट्रीयता है, अतएव हमारी जिम्मेदारी बनती है कि अंतर्राष्ट्रीय जगत में जहाँ भी हिंदी का अध्ययन-अध्यापन कार्य होता है, उनके बीच हिंदी को ज्ञान की एक सशक्त भाषा के रूप में विकसित करने का प्रयास करेंगे। इसी दिशा में हम आगामी 17 अक्टूबर, 2010 से 15 दिनों के लिए विदेशों में हिंदी पढ़ानेवाले अध्यापकों का एक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित कर रहे हैं, जिसमें विदेशी छात्रों को हिंदी पढ़ाने के लिए जरूरी पाठ्यक्रम बनाने और वर्तमान पाठ्यक्रमों में संशोधन पर गहनता से विचार किया जाएगा।

कुलपति राय ने कहा कि हिंदी विश्वविद्यालय भारत में अन्य पारंपरिक विश्वविद्यालयों से इतर है, हमारी यह कोशिश रहेगी कि विश्वविद्यालय की अवधारणा के मुताबिक उम्दा किस्म का अध्ययन-अध्यापन का कार्य हो ताकि यह विश्वविद्यालय बौद्धिकता व विमर्श का एक उत्कृष्ट केंद्र के रूप में विकसित हो सके। हम विश्वविद्यालय की परिकल्पना ज्ञान, शांति और मैत्री को दुनिया में फैलाने का भरसक प्रयास करेंगे और मुझे विश्वास है कि विदेशों में जिस प्रकार हिंदी को शोहरत मिल रही है, हम इस प्रयास पर खरे उतर सकेंगे।

गौरतलब है कि वर्ष 2009 में राजकमल से प्रकाशित ऋषिकेश सुलभ को उनके कहानी संग्रह 'वसंत के हत्यारे' पर इंदु शर्मा अंतर्राष्ट्रीय कथा सम्मान प्रदान किया गया है। ••

**प्रस्तुतिः अमित कुमार विश्वास, मानद जन संपर्क, म. गाँ. अं. हिं. वि. वि., वर्धा।**

महासचिव की ओर से

# हिंदी दिवस की धूम

हर साल की तरह इस साल भी 'हिंदी दिवस' न केवल भारत में बल्कि मॉरीशस सहित विश्व के उन सभी देशों में भी मनाया गया जहाँ हिंदी प्रेमी रहते हैं। मॉरीशस की अनेक हिंदी सेवी संस्थाएँ पिछले कई सालों से हर साल हिंदी दिवस मनाती हैं। यह तो महज संयोग है कि विश्व स्तर पर हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के लिए विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना भी मॉरीशस में हुई है।

पिछले कुछ सालों से मॉरीशस स्थित भारतीय उच्चायोग 'हिंदी दिवस' का आयोजन व्यापक स्तर पर करता आ रहा है। इस अवसर पर मॉरीशस के असंख्य हिंदी प्रेमी नागरिक और स्कूली बच्चे हिंदी दिवस मनाने के लिए उत्साहपूर्वक एकत्र होते हैं और अपना हिंदी प्रेम प्रदर्शित करने के लिए उच्चायोग द्वारा आयोजित हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। उच्चायोग द्वारा इस वर्ष आयोजित हिंदी निबंध एवं वाक् स्पर्धा प्रतियोगिताओं तथा हिंदी दिवस व पुरस्कार वितरण समारोह का विवरण इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है। मॉरीशस के अलावा स्वीडेन, कैरो, कुवैत, अर्मेनिया, अस्ट्रेलिया, हंगरी, लंदन, जमैका, दक्षिण अफ्रीका, यूक्रेन , सिंगापुर, सिडनी, अमरीका, वियतनाम और कनाडा में भी हिंदी दिवस के आयोजन के समाचार हमें प्राप्त हुए हैं।

इस वर्ष भारतीय विद्या भवन, अस्ट्रेलिया ने 'हिंदी दिवस' का आयोजन न्यू साउथ वेल्स के सिडनी स्थित संसद भवन में संसद सदस्य तथा 'मल्टीकल्वरल अफेयर्स' के संसदीय सचिव, श्री फ़रग्यूसन की उपस्थिति में 14 सितंबर को किया। इस अवसर पर अस्ट्रेलिया में बसे 47 हिंदी-उर्दू कवियों की रचनाओं का एक संकलन 'गुलदस्ता' के विमोचन के अतिरिक्त अस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड में हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान देने के लिए 64 व्यक्तियों को सम्मानित भी किया गया। इस संकलन का प्रकाशन भारतीय विद्या भवन (अस्ट्रेलिया) की ओर से किया गया। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसकी हर कविता देवनागरी तथा उर्दू दोनों लिपियों में है ताकि हिंदी या उर्दू जाननेवाले सभी पाठक इसका आनंद उठा सकें।

इस वर्ष 14 सितंबर, 2010 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी ने राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए राजीव गाँधी ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार एवं हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन के लिए इंदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार के साथ-साथ मंत्रालयों, विभागों और सार्वजनिक उपक्रमों आदि में मूल हिंदी में सर्वोत्तम कार्य करने के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड एवं गृह पत्रिका पुरस्कार प्रदान किए । इस अवसर पर कुल 53 पुरस्कार प्रदान किए गए ।

पिछली बार की तरह इस वर्ष भी भारत के गृह मंत्री माननीय श्री पी चिदंबरम ने 14 सितंबर, 2010 को 'हिंदी दिवस' की शुभकामनाएँ देते हुए अपने संदेश में सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वेबसाइटों की उल्लेखनीय भूमिका पर बल देते हुए कहा, ''आज कंप्यूटर बिना किसी कठिनाई के हिंदी में काम करने में पूरी तरह सक्षम हैं। सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से हो रही प्रगति का पूरा लाभ हिंदी प्रयोगकर्ता तक पहुँचाने के लिए यह आवश्यक है कि कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए मानक भाषा एनकोडिंग यानी यूनिकोड का प्रयोग किया जाए।'' भारत के माननीय गृह मंत्री जी ने जिस 'मानक भाषा यूनिकोड' की ओर संकेत किया है, उससे विश्वव्यापी हिंदी प्रेमियों को अवगत कराने के लिए आज युद्धस्तर पर कार्य करने कि आवश्यकता है।

जिस तरह भारत में 14 सितंबर का एक विशेष महत्व है, उसी तरह विश्व में 10 जनवरी का। संपूर्ण विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार का अनुकूल वातावरण बनाने के लिए भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा सन् 2006 में लिए गए निर्णय के अनुसार 10 जनवरी का दिन 'विश्व हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है । पिछले पाँच वर्षों से विश्वव्यापी असंख्य हिंदी प्रेमी और हिंदी सेवी संस्थाएँ 'विश्व हिंदी दिवस' का आयोजन कर रही हैं। भारत सरकार के विश्वव्यापी मिशन एवं दूतावास भी स्वयं अथवा स्थानीय हिंदी सेवी संस्थाओं के सहयोग से 'विश्व हिंदी दिवस' का आयोजन करते हैं। एक दिन ऐसा आएगा जब भारत में 'हिंदी दिवस' की तरह पूरे विश्व में 'विश्व हिंदी दिवस' मनाया जाएगा ।

हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की 7वीं आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए यह आवश्यक है कि हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी विश्वव्यापी संस्थाएँ अपने वैश्विक अभियान को और तेज़ करें ताकि संयुक्त राष्ट्र संघ के ज्यादा से ज्यादा सदस्य देशों का समर्थन प्राप्त करना सहज हो सके।••

(डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र)

**संपादक**

डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र

**संपादन सहयोग**

जिष्णु होरिशरण, प्रीति सीयामबर, विजया सरजु

**विश्व हिंदी सचिवालय**

***स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस***

**World Hindi Secretariat**
**Swift Lane, Forest Side, Mauritius**
Phone (230) 6761196
Fax (230) 6761224
E-mail : whsmauritius@intnet.mu
sgwhs@intnet.mu

## अंतर्राष्ट्रीय वातायन कविता सम्मान : 2010

बाएँ से दाएँ : मोनिका कपिल मोहता, डॉ. सत्येंद्र श्रीवास्तव, केशरीनाथ त्रिपाठी, इंडिया रस्सेल, डॉ. लक्ष्मीशंकर बाजपेई, डॉ. पदमेश गुप्त, तेजेंद्र शर्मा, बैरोनेस श्रीला फ़्लैदर एवं दिव्या माथुर

31 अगस्त के दिन लंदन के नेहरु केंद्र में आयोजित दीपों से जगमगाते सभास्थल में डॉ. लक्ष्मीशंकर बाजपेई को अंतर्राष्ट्रीय वातायन कविता सम्मान : 2010 से सम्मानित किया गया। डॉ. सत्येंद्र श्रीवास्तव की अध्यक्षता में किए गए इस कार्यक्रम में ब्रिटेन की बैरोनेस श्रीला फ़्लैदर और भारत के वरिष्ठ राजनेता श्री केशरीनाथ त्रिपाठी ने डॉ. बाजपेई को सम्मानित किया।

डॉ. बाजपेई के काव्य संसार पर प्रकाश डालते हुए लंदन के कहानीकार तेजेंद्र शर्मा ने डॉ. बाजपेई को हिंदी ग़ज़ल का एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर बताते हुए कहा कि वह एक सच्चे लेखक एवं कवि हैं। बाथ से पधारे ब्रिटेन के एक नौजवान कवि मोहन राणा ने डॉ. बाजपेई के सम्मान में प्रशस्ति पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. बाजपेई ने अपने उद्‌गार में हिंदी ग़ज़ल के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए अपनी कुछ श्रेष्ठ रचनाओं का पाठ किया : 'अपने ही हाथों में पतवार सँभाली जाए, तब तो मुमकिन है, कि ये नाव बचा ली जाए।''याद बरबस आ गई माँ, मैंने देखा जब कभी मोमबत्ती को पिघलकर, रोशनी देते हुए।' और ख़ूब नारे उछाले गए, लोग बातों में टाले गए' जैसे शेरों और ग़ज़लों ने अतिथियों को भावविभोर कर दिया। अंत में अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. सत्येंद्र श्रीवास्तव ने वातायन की स्थापना एवं लंदन के साउथ बैंक के साहित्यिक महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने वातायन को साउथ बैंक की ससून लाइब्रेरी से जोड़ते हुए ब्रिटेन में भारतीय साहित्य के सुनहरे भविष्य की कामना की।

ब्रिटेन की यात्रा कर रहे भारत के कविगण गजेंद्र सोलंकी, महेंद्र अजनबी, रामेश मोहन त्रिपाठी, श्रीमती शशि तिवारी के अलावा आयोजन में ब्रिटेन के वरिष्ठ लेखक प्रोफ़ेसर श्याम मनोहर पांडे, नरेश भारतीय, उषा राजे सक्सेना, विजय राणा, कैलाश बुधवार, प्रकाशक रोज़मरी हडसन, सनराइज़ रेडियो के रवि शर्मा, भारतीय विद्या भवन के डॉ. नंदकुमारा, फ़िल्म निर्माता संगीता दत्ता, वरिष्ठ कलाकार जेरु रॉय और सू स्नैल, अख़्तर गोल्ड, कृति यू की तितिक्षा शाह सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

सन् 2003 से वातायन विजेताओं के लंदन आने का हवाई ख़र्च भारतीय संस्कृति संबंध परिषद् प्रायोजित करती है। ••

*लंदन से दिव्या माथुर की रपट*

## चित्रा मुद्‌गल को 'चिन्नप्प भारती' और उदयराज सिंह सम्मान

### बधाई

हिंदी की जानी-मानी लेखिका श्रीमती चित्रा मुद्‌गल को उनके उपन्यास 'आवां' के लिए 'चिन्नप्प भारती सम्मान' देने की घोषणा की गई है। यह पुरस्कार चित्रा मुद्‌गल को नवंबर, 2010 को तमिलनाडु के सेलमनगर में चिन्नप्प भारती न्यास द्वारा प्रदान किया जाएगा। चिन्नप्प भारती न्यास तमिलनाडु हर साल तमिल और किसी एक भारतीय भाषा के साहित्यकार को उसकी पिछले दस सालों में प्रकाशित उत्कृष्ट रचना के लिए पुरस्कार प्रदान करता है। चिन्नप्प भारती न्यास निर्णायक मंडल की ओर से पुरस्कार राशि के रूप में 50 हज़ार रुपए श्रीमती चित्रा मुद्‌गल को और तमिल भाषा के लिए दो साहित्यकारों पूर्व प्रोफ़ेसर श्री के. पी. अरवाणन और श्री कौरनूर जाकिर रजा को साझा पुरस्कार दिया जाएगा तथा तमिल के छह अन्य साहित्यकारों को भी प्रोत्साहन पुरस्कार-स्वरूप पाँच-पाँच हज़ार रुपए दिए जाएँगे।

इस बीच श्रीमती चित्रा मुद्‌गल को चौथा उदयराज सिंह सम्मान के लिए भी चुना गया है। यह पुरस्कार 16 नवंबर, 2010 को दिल्ली में एक भव्य समारोह में प्रदान किया जाएगा। इसके अंतर्गत एक लाख रुपए की नक़द राशि प्रदान की जाएगी।

इससे पहले डॉ. रामदरश मिश्र, श्री हिमांशु जोशी और श्री कुँवर नारायण इस पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं।

विश्व के समस्त हिंदी प्रेमियों की ओर से श्रीमती चित्रा मुद्‌गल को हार्दिक बधाई। ••

# आम आदमी तक पहुँची प्रेमचंद की कथा परंपरा

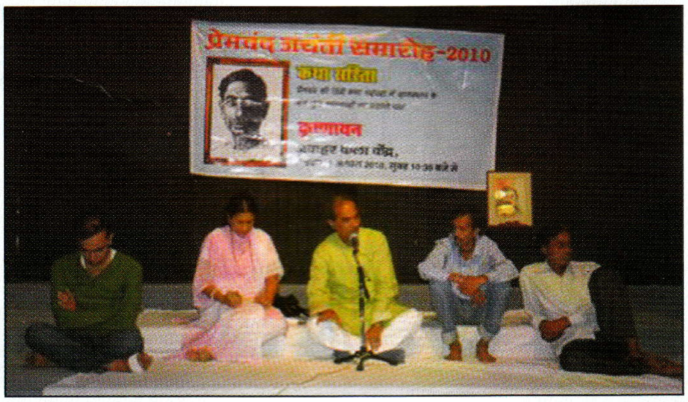


राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ और जवाहर कला केंद्र की पहल पर इस बार जयपुर, भारत में प्रेमचंद की कहानी परंपरा को 'कथा दर्शन' और 'कथा सरिता' कार्यक्रमों के माध्यम से आम लोगों तक ले जाने की कामयाब कोशिश हुई, जिसे व्यापक लोगों ने सराहा ।

31 जुलाई और 01 अगस्त, 2010 को आयोजित दो दिवसीय प्रेमचंद जयंती समारोह में फिल्म प्रदर्शन और कहानी पाठ के सत्र रखे गए थे। समारोह की शुरुआत शनिवार 31 जुलाई, 2010 की शाम प्रेमचंद की कहानियों पर गुलज़ार के निर्देशन में दूरदर्शन द्वारा निर्मित फिल्मों के प्रदर्शन से हुई ।

फिल्म प्रदर्शन से पूर्व प्रलेस के महासचिव प्रेमचंद गांधी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि प्रेमचंद की रचनाओं में व्याप्त सामाजिक संदेशों को और उनकी कहानी परंपरा को आम जनता तक ले जाने की एक रचनात्मक कोशिश है यह दो दिवसीय समारोह । इसमें एक ओर जहां प्रेमचंद की कहानियाँ पर बनी फिल्मों के माध्यम से प्रेमचंद के सरोकारों को आमजन तक ले जाने का प्रयास है, वहीं प्रेमचंद की कथा परंपरा में राजस्थान के दस युवा कहानीकारों को एक साथ प्रस्तुत कर हम प्रदेश की युवतम रचनाशीलता को राजधानी के मंच पर ला रहे हैं ।

इसके बाद प्रेमचंद की 'नामक का दारोगा', 'ज्योति' और 'हज्ज-ए-अकबर' फिल्में दिखाई गईं। 'नमक का दारोगा' तो चर्चित कहानी है, लेकिन प्रेमचंद की आम छवि से हटकर है 'ज्योति' की कहानी । एक ग्रामीण विधवा किसान स्त्री के इकलौते बेटे और ग्रामीण युवती की मासूम प्रेमकथा में मानवीय और पारिवारिक रिश्तों का प्रेम कई स्तरों पर दर्शकों को विभोर कर देता है । इसी प्रकार 'हज्ज-ए-अकबर ' में एक मुस्लिम बालक और उसकी आया के बीच अपार प्रेम को बहुत संवेदनशीलता के साथ रूपायित किया गया है ।

01 अगस्त, 2010 की सुबह 10.30 बजे 'कथा सरिता' का आगाज हुआ। वरिष्ठ कथाकार जितेंद्र भाटिया, वरिष्ठ रंगकर्मी एस.एन. पुरोहित और वयोवृद्ध विज्ञान लेखक हरिश्चंद्र भारतीय द्वारा प्रेमचंद के चित्र पर माल्यार्पण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई । इस अवसर पर प्रलेस के महासचिव प्रेमचंद गांधी ने स्वागत करते हुए कहा कि प्रेमचंद की 130वीं जयंती के मौके पर प्रदेश के दस युवा कथाकारों को एक मंच पर लाने की यह कोशिश रचनाकार और आम आदमी के बीच संवाद की पहल है, जहाँ लेखक सीधे पाठक से रूबरू होगा और कथा के आस्वाद की पुरानी परंपरा पुनर्जीवित होगी । यह प्रेमचंद की परंपरा में समकालीन रचनाशीला को कई आयामों से देखने की रचनात्मक कोशिश है । उन्होंने कहा कि दोनों सत्रों में जितेंद्र भाटिया और नंद भारद्वाज अध्यक्षता के साथ संयोजन भी करेंगे । इसके पश्चात वरिष्ठ रंगकर्मी एस.एन. पुरोहित ने प्रेमचंद की कहानी 'नमक का दारोगा' का अत्यंत प्रभावशाली ढंग से पाठ किया तो उपस्थित श्रोताओं ने उनकी तालियाँ बजाकर प्रशंसा की ।

इसके पश्चात पहले सत्र का आरंभ करते हुए जितेंद्र भाटिया ने कहा कि समूचे भारतीय साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा उनके समकालीन रचनाकारों में उनके जितना बड़ा कहानीकार कोई नहीं है, उपन्यासकार और कवि जरूर हो सकते हैं । उन्होंने कहा कि प्रेमचंद के बाद कहानी में बहुत विकास हुआ है, लेकिन सरोकार आज भी प्रेमचंद के समय के ही हैं । यही कारण है कि कहानी आज भी हमारे समय और समाज की धड़कन है, जिसे आज के कथाकार सार्थक कर रहे हैं । इसके बाद कहानी पाठ में सबसे पहले राम कुमार सिंह ने 'शराबी उर्फ तुझे हम वली समझते' कहानी का पाठ किया ।

उर्दू अफसानानिगार आदिल रज़ा मंसूरी ने अपनी कहानी 'गंदी औरत'में फुटपाथ पर रहने वाली एक स्त्री के माध्यम से समाज के सफेदपोश लोगों की गंदगी को बेनकाब करने का प्रयास किया । सुप्रसिद्ध युवा कहानीकार अरुण कुमार असफल ने अपनी कहानी 'क ख ग' का पाठ करते हुए बताया कि सामान्य अनपढ़ लोगों में शिक्षित लोगों के मुकाबले कहीं ज्यादा व्यावहारिक ज्ञान होता है जो उन्हें बिना किसी नारे के सशक्त बनाता है और दूसरों को राह दिखाता है ।

मनीषा कुलश्रेष्ठ की अनुपस्थिति में सुपरिचित कलाकार सीमा विजय ने उनकी कहानी 'स्वांग' का प्रभावी पाठ किया । अध्यक्षता करते हुए जितेंद्र भाटिया ने पढ़ी गई कहानियाँ की चर्चा करते हुए समकालीन रचनाशीलता को रेखांकित करते हुए कहा कि इधर लिखी जा रही कहानियाँ ने हिंदी कहानी के भविष्य को लेकर बहुत आशाएं जगाई हैं । सत्र के समापन में उन्होंने अपनी नई कहानी 'ख्वाब एक दीवाने का' का पाठ किया ।

'कथा सरिता' के दूसरे सत्र का आरंभ वरिष्ठ साहित्यकार नंद भारद्वाज की अध्यक्षता में युवा कहानीकार दिनेश चारण के कहानी पाठ से हुआ । उन्होंने अपनी कहानी 'पागी' के मार्फत यह बाताने का प्रयास किया कि नई पीढ़ी के रचनाकार अपनी जड़ों की कितनी गहराई से पड़ताल करते हुए आगे बढ़ रहे हैं । युवा कवि- कथाकार दुष्यंत ने 'उल्टी वाकी धार' कहानी में दो शहरी प्रेमियों के बीच तनाव और अंतर्द्वंद्व को बहुत खूबसूरती से रचते हुए युवती के नैतिक साहस को रेखांकित किया । चर्चित कथाकार चरण सिंह पथिक ने डांग क्षेत्र में होनेवाली पदयात्राओं की प्रतियोगिता के बहाने ग्रामीण समाज की कड़वी सच्चाइयों से 'यात्रा' कहानी के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया ।

अध्यक्षता करते हुए नंद भारद्वाज ने कहा कि आज पढ़ी गई कहानियों से राजस्थान की समकालीन रचनाशीलता का पता चलता है कि वह कितनी तेजी से आगे बढ़ रही है । अपने परिवेश की गहरी समझ और प्रेमचंद के सरोकारों से लैस यह पीढ़ी निश्चित रूप से आगे जाएगी और प्रदेश की जनभावनाओं को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त करेगी । इसके बाद समापन में सीमा विजय ने मार्मिक कहानी 'बूढ़ी काकी' का प्रभावशाली ढंग से पाठ किया तो श्रोताओं ने भरपूर तालियाँ बजाकर उनका स्वागत किया । ••

*सृजनगाथा से साभार*

## मनुष्यता के लिए साहित्य से जुड़े रहना होगा : प्रो. शिवकुमार मिश्र

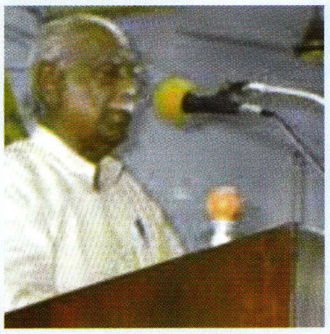

वर्धा। महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ की ओर से 'हमारा समय और साहित्य' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में सुप्रसिद्ध साहित्यकार आलोचक प्रो. शिवकुमार मिश्र ने कहा कि मानव ने चुनौतियों के बीच ही सभ्यता का विकास किया है। आज हम भूमंडलीकरण के दौर में शामिल होकर आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं। आज की केंद्रीय चिंता मनुष्य का मनुष्य बने रहने की है। बाज़ार, पूँजी, सत्ता आदि मनुष्यता को छीने जा रही है। उपभोक्तावादी संस्कृति हमें हिंसक बनाती हैं, हिंसक रूप अख़्तियार करके भी हम भौतिक सुख-सुविधाओं को अपनाना चाहते हैं। आज का समय सबसे कठिन समय है और क्रूर भी। साथ ही रचना विरोधी और मनुष्यता विरोधी भी है। साहित्य हमें मनुष्य होने की तमीज देता है। मनुष्यता के लिए हमें साहित्य से जुड़े रहने की ज़रूरत है।

प्रो. मिश्र ने कहा कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'कविता क्या है' में कविता का संबंध आदमीयत से जोड़ा है। धूमिल ने भी कविता को आदमी होने की तमीज़ बताया है। प्रेमचंद के महाजनी सभ्यता का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि सारे मानवीय व सामाजिक संबंध व्यावसायिक संबंधों में तब्दील हो चुके हैं।आज दुनिया बाज़ार में बदल रही है। जो चुनौती औपनिवेशिक दौर में थी आज उससे भी भयावह हो गई है। कुछ छिपी ताकतें मुखौटे लगाकर जनतंत्र की रक्षा, जनकल्याण आदि जुमले देकर अपना हित साध रही हैं। आज जो नया मध्यवर्ग है वो बाज़ार के तिलिस्म को स्वीकार किए हुए हैं। उन्होंने कहा कि हमारे समय में. बाजारू शब्द को गाली समझा जाता था पर आज बाज़ारू होना आन, बान और शान जैसा माना जाने लगा है। साहित्यकार एक-दूसरे पर प्रयोजनबद्ध तरीके से लेखन कर रहे हैं इसलिए साहित्य और जनता के बीच बहुत बड़ी खाई आ गई है।

अध्यक्षीय वक्तव्य में विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि आज हम उत्तर आधुनिकता की बात करते हैं। दुनिया के कई सारे देशों में आधुनिकता भी नहीं आयी है। उन्होंने प्रो. मिश्र की बातों का समर्थन करते हुए कहा कि यह सही है कि आज का समय क्रूर व मनुष्यता विरोधी है। उन्होंने आशावादी नज़रिए से कहा कि मुश्किल समय में बेहतर साहित्य रचे जाते हैं। आज हम जितनी मुश्किल घड़ी से गुज़र रहे हैं,ऐसे में भी मनुष्यता के लिए अच्छी रचनाएँ रची जाएँगी। स्वागत वक्तव्य में साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. सूरज पालीवाल ने कहा कि एक तरफ उदारीकरण, अमेरिकीकरण हो रहा है, तो दूसरी ओर हम जाति, वर्ग विभाजन की खाई से कबीलाई संस्कृति की ओर प्रवृत हो रहे हैं। आज मुद्दा यह बन गया है कि कैसे हम मनुष्यता को बचाए रखें तथा प्रगतिशील बने रहें।

विश्वविद्यालय के विशेष कर्तव्याधिकारी श्री राकेश ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि सच्ची बात कहने के साहस से ही सच्ची रचना बन जाती है।

संगोष्ठी का संचालन साहित्य विद्यापीठ के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर अरुणेश नीरन ने किया।••

*प्रस्तुति : अमित कुमार विश्वास, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा*

## राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जयंती पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

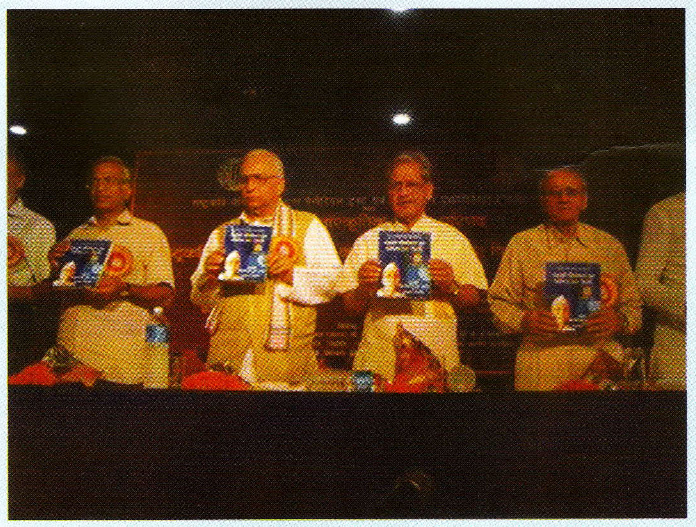

*बाएँ से दूसरे: डॉ. रत्नाकर पांडेय सहित हिंदी के अन्य गण्यमान्य विद्वान*

3 अगस्त 2010 को नई दिल्ली स्थित भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, आजाद भवन के ऑडिटोरियम में राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त मेमोरियल ट्रस्ट एवं गहोई वैश्य एसोसिएशन द्वारा राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जयंती एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया । इस अवसर पर एक स्मारिका का विमोचन भी किया गया ।

इस वर्ष राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त शिरोमणि पुरस्कार श्री मानिक बच्छावत द्वारा रचित 'इस शहर के लोग', राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त प्रवासी भारतीय पुरस्कार सुश्री दिव्या माथुर द्वारा रचित 'झूठ, झूठ और झूठ' राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त गरिमा पुरस्कार डॉ. योगेंद्रनाथ शर्मा अरुण द्वारा रचित 'वैदुष्मणि विद्दोत्तमा गरिमा', राष्ट्रकवि गहोई साहित्य सम्मान डॉ. अनुपमा गुप्त द्वारा रचित 'कुरुक्षेत्र बनाम कलि क्षेत्र' तथा विशेष सम्मान श्री गोविंद गुप्त समाज सेवी शिक्षाविद, कवि तथा साहित्यकार को दिया गया ।

इस समारोह की अध्यक्षता पूर्व सांसद डॉ. रत्नाकर पांडेय ने की । उन्होंने अपने उद्‌बोधन भाषण में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के जीवन का संक्षिप्त परिचय देते हुए वर्तमान भारतीयता की संकल्पना के जनक और उन भारतीय मूल्यों की ओर इंगित किया जिसे आज लोग त्याज्यकर चाटुकारिता और मानमर्दन की ओर उन्मुख हो गए हैं । उन्होंने कहा कि भारत की महानता तभी अस्तित्व में रह सकती है जब हम अपने महापुरुषों के पद-चिह्नों का अनुसरण करें।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों में श्री प्रदीप कुमार जैन, श्री टी. मनैया, श्रीमती दमयंती गोयल, श्री संदीप दीक्षित, श्री दिनेश मिश्र, श्री राधेश्याम कुचिया, श्री नसीब सिंह, डॉ. कंवर सेन, डॉ. एस.सी.एल. गुप्ता, श्री राजेश गौड़, श्री नारायण कुमार, श्री अनिल जोशी के साथ मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के महानिदेशक श्री सुरेश कुमार गोयल उपस्थित थे । इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। सभागार का हाल खचाखच भरा हुआ था ।

कार्यक्रम का मंचीय संचालन डॉ. विवेक गौतम और प्रबंधन श्री अजय कुमार गुप्त तथा सहयोग श्री अशोक जाजोरिया ने किया ।••

*प्रस्तुति : शमशेर अहमद खान, 2-सी, प्रेस ब्लॉक, सिविल लाइंस, दिल्ली-54*

समीक्षा

## क्या आप पढ़ना चाहेंगे विश्व हिंदी समाचार

विश्व हिंदी समाचार

वर्ष : 3 अंक : 10 जून 2010

अमेरिका में उठी हिंदी की आवाज़

स्वागतम्

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के नए सदस्य

मॉरीशस से प्रकाशित विश्व हिंदी समाचार पत्रिका विश्व भर के साहित्य समाचारों को प्रमुखता से प्रकाशित करती है। इस अंक में मुख पृष्ठ पर विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के नए सदस्यों से संबंधित जानकारी प्रकाशित की गई है। नए मंत्रिमंडल में शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय का कार्यभार माननीय श्री बसंत कुमार बनवारी; विदेश, स्थानीय सहकारिता एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्रालय का कार्यभार डॉ.अरविन बुलेल तथा कला एवं संस्कृति मंत्रालय का कार्यभार श्री मुकेश्वर चुनी को सौंपा गया है। 'कथाचक्र' परिवार की ओर से नवनियुक्त सदस्यों को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं। दूसरे समाचार में पद्मश्री डॉ. जयरामन की अध्यक्षता में अमेरिका में हुए सेमिनार में संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्यता प्राप्त सूची में हिंदी को शामिल करने की आवाज अमेरिका से उठी है। अब आशा की जा सकती है कि हिंदी अवश्य ही उस सूची में शामिल हो सकेगी।

हंगरी जैसे छोटे से देश में हिंदी के संबंध में लगाव की जानकारी डॉ. मारिया न्यजैशी के लेख से मिलती है। एक अन्य समाचार में डॉ. रामनिवास मानव के निजी पुस्तकालय में अद्वितीय पुस्तकों के संग्रह का समाचार उनकी अध्ययनशीलता की जानकारी देता है।

अन्य प्रमुख समाचारों में डॉ. दिव्या माथुर को डॉ. हरिवंश राय बच्चन लेखन सम्मान, परदेश में देश का रंग (फजल इमाम मलिक),खाली लिफाफा का लोकार्पण (डॉ.वरुण कुमार तिवारी), प्रयास के वेब संस्करण का लोकार्पण, साहित्य संवाद के अंतर्गत नारी और मीडिया, एक मंच पर लाने का प्रयास (अनिल माहेश्वरी), अंडमान निकोबार में रवींद्रनाथ टैगोर की 150वीं जन्मशती के समाचार विश्व में हिंदी के विकास की जानकारी विस्तार से देते हैं।

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (विभूति नारायण राय) का समाचार भारत ही नहीं विश्व में बढ़ती जा रही हिंदी की स्वीकार्यता पर प्रकाश डालता है। अमरीका में 25वें हिंदी कवि सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट तथा ग्लोबलाइज्ड अर्थ-व्यवस्था में हिंदी का समाचार संक्षेप में काफी कुछ कह देता है। राष्ट्रीय अनुवाद मिशन से संबंधित समाचार अनुवाद के विकास व उसके स्वरूप में हो रहे विश्वव्यापी परिवर्तन की विस्तार से जानकारी देता है। इस विषय पर प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी, श्री वी.एन. शुक्ल, श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी, सुश्री सुरेंद्र सैनी व डॉ.जयनारायण कौशिक के विचार शीघ्र ही कार्यरूप में परिणित होंगे ऐसी आशा है।

पत्रिका के संपादक डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र का संपादकीय हिंदी के प्रति जागरुकता पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। ••

*प्रस्तुति:अखिलेश शुक्ल, कथा चक्र*

## मॉरीशस में अनुवाद पर कार्यशाला

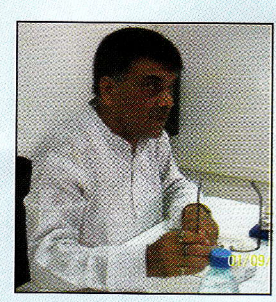

*डॉ. पूरनचंद टंडन*

वर्तमान युग में अनुवाद हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। ज्ञान के किसी भी विषय को जनसाधारण तक पहुंचाने में अनुवाद की अहम भूमिका है। मॉरीशस जैसे बहुसांस्कृतिक ,बहुभाषीय देश में अनुवाद की प्रासंगिकता और अधिक है क्योंकि अनुवाद विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, रीति-रिवाज़ों, धर्मों और समाजों के बीच सेतु का काम करता है। मॉरीशस में हिंदी को पूर्वजों की भाषा के रूप में जो समवर्णीय उपाधि दी गई है आज उसमें विस्तार लाने का समय आ गया है। वास्तव में आज इस देश में हिंदी भाषा की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक भूमिका में ही विस्तार हो रहा है। इस कारण इस भाषा में शिक्षण के उच्चतम स्तर पर अधिक से अधिक नए, प्रासंगिक, आधुनिकतम और प्रोफेसनल कार्य की आवश्यकता है।

इस आवश्यकता की पूर्ति के उद्देश्य से महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के हिंदी विभाग ने अनुवाद विषय में एक स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्रारंभ करने का विचार किया है। प्रशिक्षण के स्तर पर भूमि तैयार करने के लिए 6 से 23 जुलाई, 2010 तक तीन सप्ताह की एक कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला का संचालन दिल्ली विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर तथा भारतीय अनुवाद परिषद के निदेशक डॉ. पूरनचंद टंडन ने किया।

कार्यशाला का उद्घाटन 6 जुलाई, 2010 को किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि रहे एम जी आई / आर टी आई परिषद के अध्यक्ष श्री रवींद्रनाथ द्वारका।

कार्यशाला में हिंदी विभाग के सभी प्राध्यापकों के साथ-साथ, सृजनात्मक लेखन विभाग और भाषा संसाधन केंद्र के विद्वानों की भागीदारी रही। इनके अतिरिक्त महात्मा गांधी संस्थान के अधीन माध्यमिक पाठशालाओं के हिंदी विभागाध्यक्ष और चयनित अध्यापकों ने भी इससे लाभ उठाया।

कार्यशाला तीन सप्ताह के लिए निर्धारित की गई थी जिसके दो प्रारंभिक सप्ताह के अंतर्गत अनुवाद के सिद्धांत, रूप, प्रकार, साधन, क्षेत्र, चुनौतियां और समस्याएं आदि विषयों पर गहन विचार-विमर्श किया गया।

कार्यशाला का तीसरा सप्ताह अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा के पाठ्यक्रम के निर्माण को समर्पित रहा। ••

*डॉ. राजरानी गोबिन, हिंदी विभागाध्यक्ष, महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस*

## अब 'अ' से अनार पढ़ेंगे अमेरिकी

पेनसिल्वेनिया युनिवर्सिटी का फिलडेल्फिया स्थित लॉडर इंस्टिट्यूट

इसे भारत की दिनोंदिन मजबूत होती इकॉनमी का ही असर कहा जाएगा। एक मशहूर अमेरिकी युनिवर्सिटी ने भारत के बढ़ते बाजार में पकड़ बनाने के लिए एम बी ए स्टूडेंट्स को हिंदी पढ़ाने का फैसला किया है। हिंदी भी ऐसी कि पूरे दो साल का कड़क कोर्स ताकि भारत में बिजनेस को बढ़ाने और इसके नए-नए मौके ढूँढ़ने में भाषा आड़े न आए।

हिंदी सीखने का यह प्रोग्राम चलाएगा पेनसिल्वेनिया युनिवर्सिटी का फिलडेल्फिया स्थित लॉडर इंस्टिट्यूट । वॉर्टन स्कूल के एम बी ए और एम ए कोर्स में यह पढ़ाई जोड़ी जाएगी। युनिवर्सिटी ऑफ पेनसिल्वेनिया अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज का फाउंडिंग मेंबर है और वॉर्टन स्कूल इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस का फाउंडिंग पार्टनर। इनके कई एक्सपर्ट्स भारतीय बाज़ार पर नजर रखे हुए हैं।

दो साल का यह हिंदी कोर्स अगले साल यानी मई 2011 से शुरू हो जाएगा। यह जॉइंट-डिग्री प्रोग्राम हिंदी में ट्रेनिंग देने के अलावा, भारत के कल्चर, पॉलिटिक्स, वैल्यूज और बिजनेस के ढर्रे के बारे में बताएगा। इन दो सालों के दौरान एम बी ए स्टूडेंट्स को दो महीने भारत भेजा जाएगा ताकि वे भारत में रहकर अपने करियर को कामयाबी का चोला पहना सकें।

लॉडर इंस्टिट्यूट बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के मेंबर और सन ग्रुप ऑफ कंपनीज के वाइस चेयरमैन शिव खेमका का कहना है कि भारत की इकॉनमी ने बहुत जल्दी 21 वीं सदी में मजबूती हासिल की है। बिजनेस के ढेरों मौके लेकर भारत आया है। उनका कहना है कि लॉडर का यह ऑफर ग्रैजुएट प्रोग्राम कर रहे स्टूडेंट्स के लिए बेहद फायदेमंद साबित होगा। एम बी ए और एम ए डिग्री के लिए यह जानकारी बिजनेस को बढ़ानेवाली साबित होगी। तेजी से उभरते भारतीय बाजार की नब्ज को टटोलने, भारतीय कंपनियों का गणित अच्छी तरह समझने के लिए हिंदी की जानकारी बेहद जरूरी है।

इंस्टिट्यूट के डायरेक्टर गिलेन का कहना है कि नया हिंदी प्रोग्राम शुरू करने से पेनसिल्वेनिया युनिवर्सिटी को कई विभागों में फायदा होगा। साउथ एशिया स्टडीज, साउथ एशिया सेंटर, एशियन सेक्शन की आर्कियोलॉजी और एंथ्रोपॉलजी डिपार्टमेंट को भी भारत की एडवांस्ड स्टडी करने में मदद मिलेगी। ••

*साभार : navbharattimes.indiatimes.com*

---

सेवा में
प्रधान संपादक

पिटरमेरिट्सबर्ग,
18.8.2010

"विश्व हिंदी समाचार" की स्तुति करती हुई मैं दक्षिण अफ्रिका के मध्य प्रदेश से यह प्रतिवेदन लिख रही हूँ।

इस तथ्य से हम भलीभाँति परिचित हैं कि हिंदी भाषा का उत्थान एवं कल्याण यदि दक्षिण अफ्रिका के किसी संस्था में हो रहा है तो वह है 'हिंदी शिक्षा संघ', जो डरबन शहर में स्थित है। ख्वा ज़ुलु नटाल प्रांत के पिटरमेरिट्सबर्ग शहर में दिसंबर, 2009 से 'रेडियो हिंदवाणी' की बेहतरीन ध्वनि अब पहुँच रही है। इस रेडियो स्टेशन का संचालक और कोई नहीं बल्कि 'हिंदी शिक्षा' संघ ही है। उन अध्यक्षों के प्रति हम कृतज्ञता प्रकट करते हैं जिनके परिश्रम से यह सुविधा पिटरमेरिट्सबर्ग तक पहुँच रही है। भारतीय मूल के हिंदीभाषियों के घर-घर में पहुँचते ही हिंदवाणी उनके मन में हिंदी के प्रति लगाव एवं जागरूकता पैदा करने लगी। अब तो हिंदी शिक्षा संघ के बरसों का उद्देश्य साकार होने की झलक दिखाई देने लगी है।

पिटरमेरिट्सबर्ग में हिंदी सीखने की मांग अब दुगुनी बढ़ने लगी और रैसतोप इलाके में एक पाठशाला खुलवाना जरूरी हो गया। फरवरी, 2010 में 'जागृति हिंदी पाठशाला' का उद्घाटन हुआ। श्री राज धनलाल, हिंदी शिक्षा संघ के पूर्व अध्यक्ष की सूझबूझ और श्री शिव गाऊँ डन डेकेन रोड प्राइमरी स्कूल के प्रिंसिपल की मेहरबानी से इस स्कूल में एक कक्षा उपलब्ध हुई। यद्यपि यह पाठशाला इस स्कूल में स्थित है, यह स्वैच्छिक रूप से चल रही है और हिंदी शिक्षा संघ के सिद्धांतों के अनुसार चल रही है।

अनेक छात्र बड़े उत्साह के साथ यहाँ भर्ती हुए। शिशुओं से लेकर गृहिणियाँ तक एवं अधेड़ उम्र के पुरुष तथा स्त्रियाँ हिंदी सीखने में दिलचस्पी दिखा रहे हैं।

हमारी गृहिणियाँ बातचीत एवं अक्षरज्ञान में अधिक रुचि प्रकट कर रही हैं। हिंदवाणी से प्रेरित होकर वे हिंदी लिखना, पढ़ना और बोलना चाहती हैं।

हमारे नन्हे मुन्ने बच्चे हावभाव के साथ शिशु गीत, कविताएँ और गिनती सीख रहे हैं। खेल-खेल में कहानियाँ भी सुनाई जाती हैं।

अधेड़ उम्र की नर-नारियाँ तो सिर्फ वार्तालाप करना चाहती हैं। उनकी उम्मीद है कि अपने बाप-दादों के दिये हुए ज्ञान (जो कब के खो गये हैं) वापस आ जाएं और उनकी भविष्य की पीढ़ियों द्वारा हमेशा अमर रहे।

'जागृति हिंदी पाठशाला' हिंदी का प्रकाश सभी हिंदी प्रेमियों के मन में उजाला ही उजाला भर देगी। हमें पूरा विश्वास है कि हिंदी शिक्षा संघ के सहयोग और मार्गदर्शन से 'जागृति हिंदी पाठशाला' कदम-कदम पर उनके प्रत्येक कार्यक्रम एवं उत्सव में भाग लेगी। हमारे कार्यों को सफल करने में प्रभु हमें शक्ति दे और हमारे बुजुर्गों के आशीर्वाद हमेशा हमारे साथ रहे। पिटरमेरिट्सबर्ग में अन्य पाठशालाएँ भी चल रही हैं।

विश्व हिंदी समाचार एवं विश्व हिंदी सचिवालय को मेरी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ। सादर।

*भवदीया,*
*श्रीमती चंपा वशिष्ठमुनि,*
*SMT CHAMPA BOSITSUMUNE, 6 LINUM RD, , SOUTH AFRICA*

# हिंदी को वैश्विक गरिमा दिला गए मधुकर राव चौधरी

## श्रद्धांजलि

राष्ट्रभाषा हिंदी के उन्नयन हेतु दृढ़ संकल्पित, ऋषितुल्य व्यक्तित्व के धनी श्री मधुकर राव चौधरी जीवन पर्यन्त समाज-सेवा, राजनीति, संस्कृति एवं शिक्षा के क्षेत्र में क्रियाशील बने रहे। महात्मा गांधी के विचारों से अनुप्राणित श्री मधुकर राव चौधरी के जीवन में सादगी, सरलता, सच्चरित्रता और अध्ययनशीलता का अद्‌भुत समावेश था।

श्री चौधरी 1972 से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, भारत के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत थे। आपके मार्गदर्शन में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में रत अन्य सहयोगी संस्थाओं, हिंदी विद्वानों, हिंदी सेवियों को आगे बढ़ाने का कार्य प्रारंभ किया। आपने भारत सरकार के सहयोग से विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन भी प्रारंभ किया। आप जीवनभर हिंदी को न सिर्फ भारत में अपितु संपूर्ण विश्व में प्रतिष्ठा दिलाने हेतु प्रयत्नशील रहे।

'हम भारतीय' अभियान के माध्यम से वे देश की जनता में राष्ट्रीय भावना का संचार करने और उन्हें एकसूत्रता में आबद्ध करने हेतु अनवरत प्रयासरत थे। आप राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के साथ ही अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ, दिल्ली के भी अध्यक्ष थे।
एक लंबी बीमारी के बाद 8 जुलाई, 2010 को अपने निवास स्थान खिरोदा में उन्होंने अंतिम सांस ली।

अनन्य हिंदी प्रेमी मधुकर राव चौधरी के प्रति विश्व हिंदी सचिवालय अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है। ••

*"हिंदी का व्याकरण अपेक्षाकृत सरल है; इसके अतिरिक्त लिपि तथा उच्चारण में पूर्ण सामंजस्य है; अत: हिंदी का काम चलाऊ ज्ञान बड़ी सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है।"*

**फ़ादर कामिल बुल्के**

# सिंगापुर में हिंदी का अलख जगा गए शिवकांत तिवारी

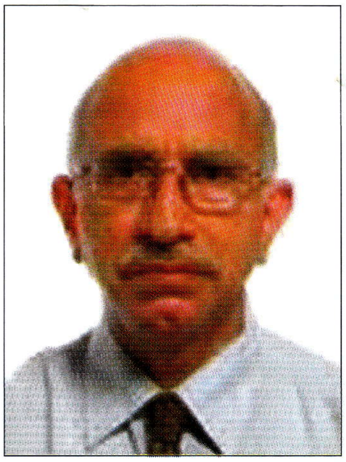

## श्रद्धांजलि

भारत के एक कर्मठ सपूत शिवकांत तिवारी ने सिंगापुर को अपनी कर्मभूमि बनाया और अपना पूरा जीवन इस देश में हिंदी भाषा तथा भारतीय संस्कृति के प्रचार - प्रसार में लगा दिया । अब वे इस दुनिया में नहीं रहे । दिमागी रक्त-स्राव के कारण एक कर्मठ जीवन का 26 जुलाई, 2010 की शाम को 64 वर्ष की आयु में अंत हो गया। तिवारी जी का जन्म 1945 में उत्तरप्रदेश के बडहलगंज (गोरखपुर ) क्षेत्र के पोहिला गांव के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था ।

उनका सपना था कि सिंगापुर के हरेक हिंदीभाषी बच्चे को अपनी मातृभाषा पढ़ने का न केवल अधिकार मिले, वरन् उसके लिए उसे यहाँ पढ़ाई जाने वाली अन्य मातृभाषाओं की ही तरह समस्त आधुनिक सुविधाएँ भी प्राप्त हों। आज वे अपने इस सपने को साकार होता देख रहे थे ।

सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली ने भी अपनी श्रद्धांजलि में तिवारी जी की विलक्षण कानूनी प्रतिभा का उल्लेख तो किया ही है, साथ ही उन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार में उनके बहुमूल्य योगदान के साथ-साथ हिंदी सोसायटी के उनके गतिशील नेतृत्व की भी सराहना की है ।

अनन्य हिंदी प्रेमी शिवकांत तिवारी के असामयिक निधन पर विश्व हिंदी सचिवालय समस्त हिंदी प्रेमियों की ओर से अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है । ••

***प्रस्तुतिः श्री जितेंद्र कुमार मित्तल, 27 ह्यूम एवेन्यू, 03-03 ह्यूमपार्क-2, सिंगापुर***

*"यह सच है कि हम दूसरों पर हिंदी नहीं लाद सकते हैं, किंतु हिंदी की उपयोगिता बढ़ाकर दूसरों को लुभाना अन्याय तो नहीं कहा जा सकता है ?"*

**फ़ादर कामिल बुल्के**

# पोर्टबलेयर में प्रेमचंद जयंती

प्रेमचंद जी की 131 वीं जयंती पर अंडमान-निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्टब्लेयर में हिंदी साहित्य कला परिषद् द्वारा आयोजित संगोष्ठी 'भूमंडलीकरण का वर्तमान संदर्भ और प्रेमचंद का कथा साहित्य' में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि प्रेमचंद के साहित्य और सामाजिक विमर्श आज भूमंडलीकरण के दौर में भी उतने ही प्रासंगिक हैं और उनकी रचनाओं के पात्र आज भी समाज में कहीं न कहीं ज़िंदा हैं। प्रेमचंद जब अपनी रचनाओं में समाज के उपेक्षित व शोषित वर्ग को प्रतिनिधित्व देते हैं तो निश्चित ही इस माध्यम से वे एक युद्ध लड़ते हैं और गहरी नींद में सोये इस वर्ग को जगाने का उपक्रम करते हैं।

परिषद् के अध्यक्ष आर. पी. सिंह ने संगोष्ठी को आगे बढ़ाते हुए कहा कि प्रेमचंद से पहले हिंदी साहित्य राजा-रानी के किस्सों, रहस्य-रोमांच में उलझा हुआ था। प्रेमचंद ने साहित्य को सच्चाई के धरातल पर उतारा। आज भी भूमंडलीकरण के इस दौर में इस सच्चाई को पहचानने की ज़रूरत है। डॉ. राम कृपाल तिवारी ने कहा कि प्रेमचंद की रचनाओं के किसान, मज़दूर को लेकर जो भी कहा गया, वह आज भी प्रासंगिक है। उनका साहित्य शाश्वत है और यथार्थ के करीब रहकर वह समय से होड़ लेती नज़र आती है।

जयबहादुर शर्मा ने प्रेमचंद के जीवन पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने जीवन और कालखंड की सच्चाई को पन्ने पर उतारा। वे सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, ज़मींदारी, कर्जखोरी, गरीबी, उपनिवेशवाद पर आजीवन लिखते रहे। डी. एम. सावित्री ने कहा कि प्रेमचंद का लेखन हिंदी साहित्य की एक ऐसी विरासत है जिसके बिना हिंदी का विकास संभव ही नहीं था। उन्होंने दूसरा विवाह अपनी प्रगतिशील परंपरा के अनुरूप बाल-विधवा शिवरानी देवी से करके एक नज़ीर गढ़ी। जगदीश नारायण राय ने प्रेमचंद की कहानियों पर ज़ोर देते हुए बताया कि वे उर्दू का संस्कार लेकर हिंदी में आए थे और हिंदी के महान लेखक बने। उनकी तुलना विश्व स्तर पर मैक्सिम गोर्की जैसे साहित्यकार से की जाती है। वे युग परिवर्तक के साथ-साथ युग निर्माता भी थे और आज भी ड्राइंग रूमी बुद्धिजीवियों की बजाय प्रेमचंद की परंपरा के लेखकों की ज़रूरत है।

संत प्रसाद राय ने कहा कि प्रेमचंद भूमंडलीकरण के दौर में इसलिए भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि वर्षों पूर्व उन्होंने जिस समाज, ग़रीबी प्रथा के बारे में लिखा था वह आज भी देखने को प्रायः मिलती हैं।

द्वीप लहरी के संपादक और परिषद् के साहित्य सचिव डॉ. व्यासमणि त्रिपाठी ने कहा कि वे आम भारतीय के रचनाकार थे। उनकी रचनाओं में वे नायक हुए, जिसे भारतीय समाज ने अछूत और घृणित समझा था। उन्होंने सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा का उपयोग किया और अपने प्रगतिशील विचारों को दृढ़ता से तर्क देते हुए समाज के सामने प्रस्तुत किया। इस ग्लैमर और उपभोक्तावादी संस्कृति में प्रेमचंद की रचनाएँ आज भी जीवंत हैं क्योंकि वे आम आदमी की बातें करती हैं।

*वक्तव्य देते हुए डॉ. कृष्ण कुमार यादव*

अनिरुद्ध त्रिपाठी ने कहा कि प्रेमचंद ने गाँवों का जो खाका खींचा, वह वैसा ही है। उनके चरित्र होरी, गोबर, धनिया आज भी समाज में दिख जाते हैं। भूमंडलीकरण की चकाचौंध से भी इनका उद्धार नहीं हुआ। परिषद् के प्रधान सचिव सदानंद राय ने कहा कि गोदान, गबन, निर्मला, प्रेमाश्रम जैसी रचनाएँ आज के समाज को भी उतना ही प्रतिबिंबित करती हैं। प्रेमचंद के कई साहित्यिक कृतियों का अँगरेज़ी, रूसी, जर्मन सहित अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ। यह उनकी विश्वस्तर पर लोकप्रियता का परिचायक है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. व्यासमणि त्रिपाठी व धन्यवाद परिषद् के उपाध्यक्ष शंभूनाथ तिवारी द्वारा किया गया। ••

***प्रस्तुतिः डॉ. व्यासमणि, पोर्टब्लेयर***

*" ईसा, हिंदी और तुलसीदास --- ये वास्तव में मेरी साधना के तीन प्रमुख घटक हैं और मेरे लिए इन तीन तत्वों में कोई विरोध नहीं, बल्कि गहरा संबंध है।"*

***फ़ादर कामिल बुल्के***